THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/

गाँधीवाद की प्रासंगिकता : समकालीन परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

अनिता[1], **डॉ० बबीता गोयल**[2]
परास्नातक शोधार्थिनी- राजनीति विज्ञान, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर
शोध निर्देशिका, एसिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान, ताराचंद वैदिक पुत्री डिग्री कॉलेज,
Email ID: anuj.anitta.official@gmail.com

सारांश

गाँधीवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक पक्षों का समन्वित दर्शन है। महात्मा गाँधी ने सत्य, अहिंसा, स्वराज, स्वदेशी, ट्रस्टीशिप, ग्राम स्वराज और सर्वोदय जैसे सिद्धांतों के माध्यम से भारतीय समाज को नई दिशा प्रदान की। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में बढ़ती हिंसा, उपभोक्तावाद, पर्यावरण संकट, सामाजिक असमानता और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ मानव सभ्यता के सामने गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसे समय में गाँधीवाद की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में गाँधीवाद के प्रमुख सिद्धांतों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि आधुनिक समाज में उनकी उपयोगिता किस प्रकार बनी हुई है। अध्ययन का निष्कर्ष यह दर्शाता है कि गाँधीवादी विचार न केवल भारत, बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए शांति, समानता और सतत विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

मुख्य शब्द : गाँधीवाद, अहिंसा, सत्य, स्वराज, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, प्रासंगिकता

प्रस्तावना

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गाँधी का योगदान केवल राजनीतिक नेतृत्व तक सीमित नहीं था। उन्होंने भारतीय समाज को नैतिकता, आत्मनिर्भरता और मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाया। गाँधीवाद एक ऐसा दर्शन है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के समग्र विकास पर बल देता है। गाँधीजी का मानना था कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी नैतिकता और आत्मबल में निहित होती है।

आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है, किन्तु इसके साथ-साथ हिंसा, युद्ध, आतंकवाद, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, पर्यावरण प्रदूषण तथा नैतिक पतन जैसी समस्याएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं। मनुष्य भौतिक प्रगति तो कर रहा है, परंतु मानसिक और नैतिक स्तर पर संकट का सामना कर रहा है। ऐसे समय में गाँधीवाद के सिद्धांत मानव समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

गाँधीजी ने कहा था कि "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।" उनका जीवन सादगी, त्याग, सेवा और नैतिकता का प्रतीक था। वर्तमान समय में जब राजनीति में भ्रष्टाचार, समाज में असहिष्णुता और आर्थिक क्षेत्र में शोषण बढ़ रहा है, तब गाँधीवादी विचारों की प्रासंगिकता और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

गाँधीवाद का अर्थ एवं स्वरूप

गाँधीवाद से आशय उन विचारों और सिद्धांतों से है जिन्हें महात्मा गाँधी ने अपने जीवन में अपनाया और समाज के सामने प्रस्तुत किया। गाँधीवाद किसी कठोर सिद्धांत या वाद का नाम नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक पद्धति है। इसका मूल आधार सत्य और अहिंसा है।

गाँधीवाद का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि ऐसे समाज की स्थापना करना था जहाँ समानता, न्याय, प्रेम और सहयोग का वातावरण हो। गाँधीजी ने भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं से प्रेरणा लेकर अपने विचारों को विकसित किया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता की अंधी दौड़ का विरोध करते हुए भारतीय जीवन मूल्यों को महत्व दिया।

गाँधीवाद के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं—

1. सत्य
2. अहिंसा
3. स्वराज
4. स्वदेशी
5. ट्रस्टीशिप
6. सर्वोदय
7. ग्राम स्वराज
8. सादगी और आत्मनिर्भरता

गाँधीवाद के प्रमुख सिद्धांत

1. सत्य का सिद्धांत

गाँधीजी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है। उन्होंने सत्य को जीवन का सर्वोच्च मूल्य माना। उनके लिए सत्य केवल बोलने तक सीमित नहीं था, बल्कि विचार, व्यवहार और कर्म में भी सत्यनिष्ठा आवश्यक थी।

आज के समय में जब झूठ, भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी समाज में बढ़ती जा रही है, तब सत्य का सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। प्रशासन, राजनीति, शिक्षा और व्यापार सभी क्षेत्रों में सत्यनिष्ठा की आवश्यकता है।

2. अहिंसा का सिद्धांत

अहिंसा गाँधीवाद का मूल आधार है। गाँधीजी का मानना था कि हिंसा से केवल विनाश होता है, जबकि अहिंसा प्रेम और सहयोग को बढ़ावा देती है। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अहिंसात्मक आंदोलनों का प्रयोग कर यह सिद्ध किया कि बिना हिंसा के भी बड़े परिवर्तन संभव हैं।

वर्तमान विश्व में आतंकवाद, युद्ध और साम्प्रदायिक हिंसा जैसी समस्याएँ गंभीर रूप ले चुकी हैं। ऐसे समय में गाँधीजी का अहिंसा का संदेश विश्व शांति के लिए अत्यंत उपयोगी है।

मार्टिन लूथर किंग जूनियर और नेल्सन मंडेला जैसे नेताओं ने भी गाँधीजी के अहिंसात्मक विचारों से प्रेरणा प्राप्त की।

3. स्वराज का सिद्धांत

गाँधीजी के अनुसार स्वराज का अर्थ केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि आत्म-नियंत्रण और आत्मनिर्भरता भी है। व्यक्ति तभी स्वतंत्र कहलाता है जब वह अपने जीवन का संचालन स्वयं कर सके।

आज लोकतंत्र में जनता को अधिकार तो प्राप्त हैं, परंतु भ्रष्टाचार और राजनीतिक स्वार्थ लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर कर रहे हैं। गाँधीजी का स्वराज का विचार नागरिकों को जिम्मेदार और जागरूक बनने की प्रेरणा देता है।

4. स्वदेशी का सिद्धांत: गाँधीजी ने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर बल दिया। उनका मानना था कि स्थानीय उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है।

आज वैश्वीकरण के युग में विदेशी वस्तुओं पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ गई है। इससे स्थानीय उद्योग प्रभावित हो रहे हैं। "मेक इन इंडिया" और "वोकल फॉर लोकल" जैसे अभियान गाँधीजी के स्वदेशी सिद्धांत की आधुनिक अभिव्यक्ति हैं।

5. ट्रस्टीशिप का सिद्धांत

गाँधीजी ने पूँजीपतियों को समाज का "ट्रस्टी" माना। उनका मानना था कि धनवान व्यक्तियों को अपनी संपत्ति का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए।

आज आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ रही है। कुछ लोगों के पास अत्यधिक धन है, जबकि बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। ऐसी स्थिति में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत सामाजिक न्याय स्थापित करने में सहायक हो सकता है।

6. सर्वोदय का सिद्धांत

सर्वोदय का अर्थ है—सभी का उदय या कल्याण। गाँधीजी चाहते थे कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास का लाभ पहुँचे।

आज समावेशी विकास की अवधारणा विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण मानी जा रही है। गरीबी उन्मूलन, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा की योजनाएँ सर्वोदय के सिद्धांत से जुड़ी हुई हैं।

7. ग्राम स्वराज का सिद्धांत

गाँधीजी भारत को गाँवों का देश मानते थे। उनका विश्वास था कि जब तक गाँव आत्मनिर्भर नहीं बनेंगे, तब तक राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।

आज भी भारत की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण विकास, पंचायत राज और स्थानीय स्वशासन की अवधारणाएँ गाँधीजी के ग्राम स्वराज के विचारों को दर्शाती हैं।

आधुनिक युग में गाँधीवाद की प्रासंगिकता

1. विश्व शांति के लिए गाँधीवाद

आज विश्व युद्ध, आतंकवाद और परमाणु हथियारों की होड़ से ग्रस्त है। विभिन्न देशों के बीच संघर्ष बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में गाँधीजी का अहिंसा और शांति का संदेश विश्व के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी 2 अक्टूबर को "अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस" घोषित किया है, जो गाँधीजी के विचारों की वैश्विक स्वीकृति को दर्शाता है।

2. सामाजिक समरसता में गाँधीवाद

गाँधीजी जातिवाद, अस्पृश्यता और साम्प्रदायिकता के विरोधी थे। उन्होंने समाज में समानता और भाईचारे की स्थापना पर बल दिया।

आज समाज में जातीय और धार्मिक तनाव बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में गाँधीवाद सामाजिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

3. पर्यावरण संरक्षण में गाँधीवाद

गाँधीजी सादगीपूर्ण जीवन के समर्थक थे। उन्होंने आवश्यकता के अनुसार उपभोग करने की बात कही। उनका प्रसिद्ध कथन है—"प्रकृति हर व्यक्ति की आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन किसी एक के लालच को नहीं।"

आज पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की समस्या गंभीर हो चुकी है। गाँधीजी का सादा जीवन और सीमित उपभोग का सिद्धांत सतत विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. आर्थिक क्षेत्र में गाँधीवाद: वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था में आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है। बेरोजगारी और गरीबी जैसी समस्याएँ भी गंभीर हैं। गाँधीजी का कुटीर उद्योग, श्रम की गरिमा और आत्मनिर्भरता का सिद्धांत ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना सकता है।

"आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा भी गाँधीवादी आर्थिक सोच से जुड़ी हुई प्रतीत होती है।

5. राजनीति में गाँधीवाद

गाँधीजी राजनीति को नैतिकता से जोड़कर देखते थे। उनका मानना था कि राजनीति का उद्देश्य जनता की सेवा होना चाहिए।

आज राजनीति में भ्रष्टाचार, अपराधीकरण और सत्ता की लालसा बढ़ रही है। गाँधीवादी नैतिक राजनीति लोकतंत्र को स्वस्थ दिशा प्रदान कर सकती है।

6. शिक्षा के क्षेत्र में गाँधीवाद

गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा पर बल दिया। उनका मानना था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता होना चाहिए।

नई शिक्षा नीति में कौशल विकास और व्यावहारिक शिक्षा पर दिया गया जोर गाँधीवादी शिक्षा दर्शन की याद दिलाता है।

गाँधीवाद की आलोचना

यद्यपि गाँधीवाद अत्यंत प्रभावशाली विचारधारा है, फिर भी इसकी कुछ आलोचनाएँ भी की जाती हैं।

1. कुछ विद्वानों का मानना है कि अहिंसा का सिद्धांत हर परिस्थिति में व्यावहारिक नहीं हो सकता।
2. औद्योगीकरण के युग में कुटीर उद्योगों पर अत्यधिक बल देना आर्थिक विकास में बाधा माना जाता है।
3. ट्रस्टीशिप का सिद्धांत आदर्शवादी माना जाता है क्योंकि पूँजीपति स्वेच्छा से संपत्ति का समान वितरण नहीं करते।
4. आधुनिक प्रतिस्पर्धी युग में सादगी और सीमित उपभोग का पालन कठिन माना जाता है।

इन आलोचनाओं के बावजूद गाँधीवाद की मूल भावना आज भी मानव समाज के लिए उपयोगी और प्रेरणादायक है।

गाँधीवाद और युवाओं की भूमिका

आज का युवा वर्ग आधुनिकता, तकनीक और वैश्वीकरण से अत्यधिक प्रभावित है। एक ओर युवाओं के पास अवसरों की कमी नहीं है, वहीं दूसरी ओर वे तनाव, बेरोजगारी, नशाखोरी और नैतिक संकट जैसी समस्याओं का सामना कर रहे हैं। गाँधीजी का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

गाँधीजी ने आत्मानुशासन, परिश्रम, सेवा और नैतिकता पर बल दिया। उनका मानना था कि युवा राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी शक्ति होते हैं। आज यदि युवा गाँधीवादी मूल्यों को अपनाएँ, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

सोशल मीडिया के युग में जहाँ गलत सूचना और घृणा तेजी से फैलती है, वहाँ गाँधीजी का सत्य और अहिंसा का सिद्धांत अत्यंत आवश्यक हो जाता है। युवाओं को सहिष्णुता, संवाद और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करनी चाहिए।

वैश्वीकरण और गाँधीवाद

वैश्वीकरण ने विश्व को आर्थिक रूप से जोड़ दिया है, लेकिन इसके कारण सांस्कृतिक असंतुलन और आर्थिक असमानता भी बढ़ी है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रभाव से स्थानीय उद्योग और परंपराएँ प्रभावित हो रही हैं।

गाँधीजी का स्वदेशी सिद्धांत आज भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में सहायक हो सकता है। "लोकल फॉर वोकल" की अवधारणा इसी दिशा में एक प्रयास है।

इसके अतिरिक्त, वैश्वीकरण के कारण उपभोक्तावाद बढ़ा है, जिससे व्यक्ति की आवश्यकताएँ अनंत होती जा रही हैं। गाँधीजी सीमित आवश्यकताओं और सादगीपूर्ण जीवन के समर्थक थे। उनका विचार था कि मनुष्य को आवश्यकता के अनुसार उपभोग करना चाहिए, न कि लालच के आधार पर।

महिला सशक्तिकरण और गाँधीवाद

गाँधीजी महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार देने के पक्षधर थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। उनके अनुसार महिला केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

आज महिला शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हुई है, फिर भी लैंगिक भेदभाव, घरेलू हिंसा और असमानता जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। गाँधीवादी विचार महिलाओं के सम्मान और समानता को बढ़ावा देते हैं।

गाँधीजी का मानना था कि अहिंसा और करुणा की भावना महिलाओं में स्वाभाविक रूप से अधिक होती है, इसलिए वे समाज को अधिक मानवीय बना सकती हैं।

गाँधीवाद और मानवाधिकार

मानवाधिकारों की अवधारणा का मूल उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को सम्मानपूर्वक जीवन प्रदान करना है। गाँधीजी ने सदैव दलितों, गरीबों और शोषितों के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

उन्होंने अस्पृश्यता के विरुद्ध आंदोलन चलाया और दलितों को "हरिजन" नाम दिया। उनका विचार था कि समाज में किसी भी व्यक्ति के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए।

आज मानवाधिकारों के उल्लंघन की घटनाएँ विश्वभर में देखी जाती हैं। नस्लवाद, जातिवाद और धार्मिक भेदभाव जैसी समस्याओं के समाधान में गाँधीवादी दृष्टिकोण अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

डिजिटल युग में गाँधीवाद की आवश्यकता

आज इंटरनेट और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के दौर में मनुष्य तकनीकी रूप से अत्यधिक विकसित हो गया है। लेकिन इसके साथ साइबर अपराध, फेक न्यूज, ऑनलाइन हिंसा और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ भी बढ़ी हैं।

गाँधीजी का सत्य और नैतिकता का सिद्धांत डिजिटल युग में भी उतना ही प्रासंगिक है। यदि सोशल मीडिया का उपयोग जिम्मेदारी और सत्यनिष्ठा के साथ किया जाए, तो यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

डिजिटल दुनिया में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और अकेलेपन के बीच गाँधीजी का सादगीपूर्ण और संतुलित जीवन का संदेश मानसिक शांति प्रदान कर सकता है।

भारतीय लोकतंत्र और गाँधीवाद

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र की सफलता नागरिकों की जागरूकता, नैतिकता और सहभागिता पर निर्भर करती है। गाँधीजी लोकतंत्र को केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि जीवन पद्धति मानते थे।

उन्होंने विकेंद्रीकरण और पंचायत राज पर बल दिया। वर्तमान समय में स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालाँकि आज लोकतंत्र में धनबल, बाहुबल और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। ऐसी स्थिति में गाँधीवादी राजनीतिक नैतिकता लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में सहायक हो सकती है।

गाँधीवाद और सतत विकास: संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित "सतत विकास लक्ष्य" (SDGs) का उद्देश्य गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक समानता स्थापित करना है। गाँधीवादी विचार इन लक्ष्यों के अनुरूप दिखाई देते हैं।

गाँधीजी ने प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने की प्रेरणा दी। उनका सादा जीवन और सीमित उपभोग का सिद्धांत प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में सहायक हो सकता है।

आज जल संकट, वायु प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ मानव अस्तित्व के लिए खतरा बन चुकी हैं। इसलिए गाँधीवादी जीवन शैली सतत विकास का प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करती है।

शोध-पत्र का समग्र विश्लेषण

गाँधीवाद का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह केवल स्वतंत्रता आंदोलन की विचारधारा नहीं, बल्कि मानव जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ा व्यापक दर्शन है। गाँधीजी ने व्यक्ति के नैतिक विकास को सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का आधार माना।

उनके विचारों में आध्यात्मिकता और व्यावहारिकता का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने सत्य और अहिंसा जैसे मूल्यों को केवल उपदेश के रूप में नहीं, बल्कि अपने जीवन में व्यवहारिक रूप से अपनाया। यही कारण है कि गाँधीवाद आज भी विश्वभर में सम्मान के साथ देखा जाता है।

वर्तमान समय की चुनौतियाँ—जैसे हिंसा, आतंकवाद, पर्यावरण संकट, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता और नैतिक पतन—इन सबके समाधान के लिए गाँधीवादी दृष्टिकोण उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

गाँधीवाद केवल अतीत की विचारधारा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक दर्शन है। सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सर्वोदय और ग्राम स्वराज जैसे सिद्धांत आधुनिक समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

आज विश्व जिस प्रकार हिंसा, पर्यावरण संकट, आर्थिक असमानता और नैतिक पतन से जूझ रहा है, उसमें गाँधीवादी विचार मानवता को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। गाँधीजी ने जिस आदर्श समाज की कल्पना की थी, वह आज भी मानव कल्याण का सर्वोत्तम मार्ग है।

अतः यह कहा जा सकता है कि गाँधीवाद की प्रासंगिकता समय के साथ कम नहीं हुई है, बल्कि वर्तमान परिस्थितियों में और अधिक बढ़ गई है। यदि समाज और राष्ट्र गाँधीजी के सिद्धांतों को व्यवहार में अपनाएँ, तो एक शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और समतामूलक विश्व की स्थापना संभव है।

विस्तृत संदर्भ सूची

1. मोहनदास करमचंद गाँधी — *हिंद स्वराज*
2. मोहनदास करमचंद गाँधी — *सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा*
3. बी. आर. नंदा — *महात्मा गाँधी : जीवनी*
4. रामचंद्र गुहा — *Gandhi Before India*
5. लुई फिशर — *The Life of Mahatma Gandhi*
6. जे. बी. कृपलानी — *The Gandhian Way*
7. विनोबा भावे — *सर्वोदय विचार*
8. डी. जी. तेंदुलकर — *महात्मा गाँधी का जीवन चरित्र*
9. भारतीय राजनीति एवं शासन से संबंधित पुस्तकें
10. विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाएँ।

Cite this Article

अनिता[1], **डॉ० बबीता गोयल**[2], **"गाँधीवाद की प्रासंगिकता : समकालीन परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन"** The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp-511–517, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

अनिता[1], डॉ० बबीता गोयल[2]

For publication of Research Paper title

गाँधीवाद की प्रासंगिकता : समकालीन परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/